

श्रीमद् वाल्मीकि रामायण के अयोध्याकाण्ड में निरूपित चरित्रों की अलौकिक कर्तव्यनिष्ठा

डॉ. हेमा एल. सोलंकी

असोसिएट प्रोफेसर

संस्कृत विभाग

एन.एस.पटेल आर्ट्स कॉलेज (ऑटोनोमस), आणंद

hemasolanki46@yahoo.com

Mob. No. :9727778418

सारांश (Abstract)

भारतीय के सामने उत्तम जीवन यापन के लिए हमारे क्रान्तदृष्टा ऋषि तुल्य कवियों अपने साहित्य सर्जन से जीवन का एक अनुपम दर्शन प्रगट किया है, परन्तु युगप्रभाव या कालप्रभाव के कारण मनुष्य के जीवनयापन के मानदण्ड परिवर्तित हुए हैं। एक ऐसा समय आया है कि मनुष्य है तो भौतिकवादी पर उसे दूसरों के सामने खुद को धार्मिक या आध्यात्मिक प्रदर्शित करना है। हर एक मनुष्य बात तो करते रामायण और महाभारत के आदर्शों और सिद्धान्तों कि किन्तु किसी के व्यवहार में हमें वह दिखाई देते नहीं हैं। इस का कारण यह है कि अब तक हमने इन कालजयी ग्रन्थों का यथायोग्य ज्ञान प्राप्त नहीं किया।

आदि काव्य रामायण और महाभारत ऐसा उत्तम जीवन दर्शन प्रगट करने वाले शाश्वत ग्रन्थ है। मनुष्य उत्तम जीवन यापन के लिए आवश्यक एवं कान्तासम्मित उपदेश इन काव्यों से ही ग्रहण करते हैं। प्रसिद्ध रामकथा द्वारा महर्षि वाल्मीकि ने उत्तम जीवन मूल्यों एवं आदर्शों को प्रकाशित किया। इन मूल्यों और आदर्शों को उन्होंने अपने चरित्रों के माध्यम से प्रकाशित किया जो विश्व के किसी भी मनुष्य मानस को प्रभावित कर सकता है। महर्षि वाल्मीकि रामायण के ऐसे ही उत्तम चरित्रों के माध्यम से मनुष्य को एक यथार्थ जीवन दर्शन प्राप्त हो ऐसा इस प्रपत्र का उद्देश्य है। समग्र रामायण कथा का बीज स्वरूप अयोध्याकाण्ड

के राम, सीता, लक्ष्मण, भरत, दशरथ, कौसल्या, कैकेयी, सुमित्रा और मंथरा जैसे पात्र के माध्यम से कर्तव्यनिष्ठा जैसे मनुष्य जीवन के एक अत्यान्तावश्यक जीवनधर्म को सूक्ष्म रूप से प्रदर्शित किया है जिसका पालन कर मनुष्य वसुधैवकुटुम्बकम् के ख्याल को न केवल अपने कुटुम्ब तक किन्तु व्यापक रूप से सार्थक कर सकता है। अतः कवि रवीन्द्रनाथ टागोर इसे विशाल क्षेत्र पर चलने वाली बृहत् कुटुम्बकथा कहते हैं।

संकेत शब्द (Keywords)

रामायण, क्रान्तदृष्टा, कालजयी, चरित्र, कर्तव्यनिष्ठा, वसुधैवकुटुम्बकम्, रवीन्द्रनाथ टागोर

श्रीमद् वाल्मीकि रामायण के अयोध्याकाण्ड में निरूपित चरित्रों की अलौकिक कर्तव्यनिष्ठा

कवि क्रान्तदृष्टा होने के कारण अपने सर्जन में जीवन का अनुपम दर्शन प्रगट करते हैं। आदि काव्य रामायण और महाभारत ऐसा उत्तम जीवन दर्शन प्रगट करने वाले शाश्वत ग्रन्थ हैं। मनुष्य उत्तम जीवन यापन के लिए आवश्यक एवं कान्तासम्मित उपदेश इन काव्यों से ही ग्रहण करते हैं। प्रसिद्ध रामकथा द्वारा महर्षि वाल्मीकि ने उत्तम जीवन मूल्यों एवं आदर्शों को प्रकाशित किया अतः यह काव्य कालजयी हुआ। कहाँ गया है कि जब पात्र चरित्र बनते हैं तो वह चिरंजीवी हो जाते हैं। राम के 'अयन' अर्थात् ऊर्ध्व जीवन गति के साथ अन्य चरित्रों की जीवनयात्रा को जोड़कर कवि ने इन चरित्रों के द्वारा उच्च जीवन दर्शन प्रगट किया। ब्रह्माजी ने वाल्मीकि को दिया हुआ वरदान इन चरित्रों ने ही सार्थक किया है।

यावत् स्थास्यन्ति गिरयः सरितश्च माहितले ।

तावाद् रामायण कथा लोकेषु प्रचरिष्यति॥

“ जब तक इस पृथ्वी पर पर्वत और नदीयाँ स्थिर रहेगी तब तक रामायण कथा लोक में प्रसिद्ध रहेगी”¹ समग्र रामायण के विविध चरित्रों में विशेष कर अयोध्याकाण्ड के चरित्रों

के निरूपण का यहाँ उद्देश्य है, क्योंकि अयोध्याकाण्ड वाल्मीकि रामायण का हार्द है, रामायण के कथावृक्ष का बीज है। रामायण की घटनाओं के विकास का आधार अयोध्याकाण्ड है। इस लिए डॉ. याकोबी रामायण का प्रारम्भ अयोध्याकाण्ड से ही मानते हैं।² कवि रवीन्द्रनाथ टागोर इसे विशाल क्षेत्र पर चलने वाली बृहत् कुटुम्बकथा कहते हैं।³ किसी भी कुटुम्ब के सुख और समृद्धि और शान्ति की निव उसके हर एक कुटुम्बीजन की कर्तव्यनिष्ठा है। विश्व के हर एक मनुष्य के मन, हृदय

पर छाये हुए रामायण के यह चरित्र कर्तव्यनिष्ठा की प्रतियोगिता करते हुए प्रतीत होते हैं। जिसका प्रारम्भ राजा दशरथ से करते हैं।

➤ राजा दशरथ :-

रामायण के अयोध्याकाण्ड में जिन पात्रों का विकास हुआ उस में पिता दशरथ प्रथम है। महर्षि वाल्मीकि ने बालकाण्ड में अयोध्यानगर के इस राजवी के गुणों का आलेखन किया है।⁴ उन्हें प्रजापालक राजा, दूरदर्शी एवं तेजस्वी, प्रजाप्रिय, धर्मपारायण और जितेन्द्रिय कहाँ गया है। विशेष कर वह एक उत्तम राजनीतिज्ञ भी है। पुत्र प्राप्ति के लिए पुत्रेष्टि यज्ञ में से प्राप्त पायस अपनी तीन रनियों में विभाजित करते समय उनकी दूरदर्शिता प्रगट होती है। पायस का आधा हिस्सा रानी कौसल्या को दिया, आधे हिस्से में से एक भाग कैकेयी और दो भाग सुमित्रा को दिये। प्रिय रानी कैकेयी थी, फिर भी राजा का इस तरह से विभाजन विचारणीय है। वाल्मीकि कहते हैं वृद्ध राजने काम वश राज्यशूलक दे कर तरुणी पत्नी से विवाह किया है, ऐसे में राजा दशरथ कैकेयी के स्वभाव से परिचित हैं। अतः वह पायस विभाजन में सतर्क हैं।

² Jakobi, H. Das Ramayana, Eng. Translation, Ghosal, S.N., Page-20

³ प्राचीन साहित्य - रवीन्द्रनाथ ठाकुर, पृष्ठ-७

⁴ वाल्मीकिरामायण- बालकाण्ड - ६/ १-४

राजा दशरथ प्रजा के हितचिंतक होने के कारण प्रजा की सुखाकारी चाहते हैं, अपने कार्यकाल के बाद प्रजा को उत्तम प्रजापालक राजा प्राप्त हो यह देखना उनका कर्तव्य है। अपनी यह कर्तव्यपरायणता के लिए राम का राज्याभिषेक करना उन्हें आवश्यक लगा। कैकेय राज अश्वपति को कैकेयी के साथ विवाह हेतु 'राज्यशुल्क' में कैकेयी पुत्र भरत को राजा बनाने का वचनभङ्ग उन्हें यहाँ विचलित नहीं करता क्योंकि इस समय का सत्य यह है की सर्वगुणसम्पन्न एवं प्रजाप्रिय राम ही राजा बने। अपने मंत्रियों से मसवहरा कर वह आस-पास के नगरों के राजा, सामन्तों, जानपदों आदि को इस बात की चर्चा के लिए और उनकी सम्मति के लिए एकत्रित करते हैं।⁵ उनके समक्ष विचक्षणतापूर्वक अपनी परिस्थिति का वर्णन करते हुए कहते हैं, “मेरे पूर्वजों ने अयोध्या का पुत्रवत् पालन किया है। मैं भी अपनी प्रजा का रक्षण करते हुए वृद्ध हुआ हूँ अतः इस शरीर को विश्राम देने की अभिलाषा है। मैं अब थक चुका हूँ। मैं ऐसा मानता हूँ कि मेरा पुत्र राम सर्वगुणसम्पन्न और शत्रुओं का दमन करने वाला, इन्द्र समान बलवान है। अतः उसे मैं युवराज पद पर अभिषिक्त करना चाहता हूँ।⁶

राजा दशरथ भरत से अधिक ऐसे राम के सामर्थ्य को जानते हैं। राम जयेष्ठ पुत्र होने के साथ उन्हें अति प्रिय है। वैसे भी राज्य का उत्तराधिकारी जयेष्ठ पुत्र होता है इसलिए राजा को इस बात की प्रतीति हुई हो कि कैकेयी लिए कामान्ध राजाने राज्यशुल्क में राम का हक्क भरत को दे दिया। भरत लम्बे समय से अपने ननिहाल है इस समय उनको बुलाना आवश्यक भी नहीं माना बल्कि उनकी अनुपस्थिति में ही राम का राज्याभिषेक हो ऐसा आग्रह रखा। भरत के प्रति अपनी आशङ्का राम के सामने व्यक्त करते हुए कहते हैं कि, “भरत सत्पुरुष है सदाचार वाला है। वह आपका अनुसरण करनेवाला, धर्मात्मा, दयालु और जितेन्द्रिय भी है। परन्तु मनुष्य का चित्त हमेशा स्थिर नहीं रहता। धर्मयुक्त सज्जनों का मन कभी राग-द्वेष से

⁵ वाल्मीकिरामायण - अयोध्याकाण्ड - १/३६-३७

⁶ वही - अयोध्याकाण्ड - २/ ३-१०

युक्त हो जाता है। अतः भरत यहाँ नहीं है तब तक आपका राज्याभिषेक हो जाना चाहिए।⁷
 कैकेयी के वरदान मांगने पर प्रियपुत्र राम के वनगमन की बात से अत्यंत विचलित है।

अत्यंत निश्चिंत हो कर राम को कहते हैं कि, “मुझे बन्दी बनाकर तुम राजा बन जाओ”।
 अपनी प्रजा के प्रति राजा दशरथ की कर्तव्यनिष्ठा की यह पराकाष्ठा है। अपनी पुत्रवधू सीता को कैकेयी द्वारा वल्कल धारण करने की बात सुनकर उनका गुस्सा सातवें आसमान पर पहुँचता है। पुत्रीवत् स्नेह के कारण सीता के साथ चौदह वर्ष चले इतने वस्त्राभूषण भेजने की आज्ञा करते हैं।⁸ पितातुल्य ससुर का कर्तव्य इससे अधिक क्या होता ? इस तरह पुत्रप्रेम और पत्नी के बीच में आंदोलित होते और अन्त में अपने प्राणों का त्याग करते राजा दशरथ के करुणामय चरित्र का वाल्मीकि ने नाटकीय ढंग से आलेखन किया है।

➤ राम :-

रामायण ‘राम’ के चरित्र का आलेखन करने वाला काव्य है। अतः नायक राम कर्तव्यपरायणता के पर्याय प्रतीत होते हैं। ‘नायक’ शब्द ‘नी’ धातु से निष्पन्न हुआ है ‘नीयते इति नायकः’। उसका अर्थ है मार्गदर्शक, स्वामी और प्रधान। समग्र रामायण में कर्तव्यनिष्ठा का पालन करने में ही जिनकी गति है ऐसे नायक से कोई क्या नहीं शिखेगा ? कर्तव्यनिष्ठ पुत्र, कर्तव्यनिष्ठ पति, कर्तव्यनिष्ठ भाई, कर्तव्यनिष्ठ मित्र और कर्तव्यनिष्ठ राजा। महर्षि वाल्मीकि नारदजी से पूछा,

को न्वस्मिन्साम्प्रतं लोके गुणवान् कश्च वीर्यवान्

धर्मज्ञश्च कृतज्ञश्च सत्यवाक्यो दृढव्रतः॥

⁷ वही- ४/ २५-२७

⁸ वही - २३/ १४

वर्तमान समय में इस लोक में गुणवान, वीर्यवान, धमज, कृतज्ञ, सत्यवादी, दृढ़प्रतिज्ञ ऐसे कौन है? ऐसे कई गुणों का वर्णन कर प्रश्न पूछने पर नारदजी उत्तर देते हैं।⁹

इक्ष्वाकुवंशप्रभवो रामो नाम जनैः श्रुतः।

नियतात्मा महावीर्य द्युतिमान्धृतिमान्वशी॥

इक्ष्वाकु वंश में उत्पन्न एक ऐसे पुरुष राम नाम से लोक में प्रख्यात है। जो मन को वश में रखने वाले, महावीर, कान्तिवान, धीरजवान आदि गुणों से युक्त है।¹⁰

बालकाण्ड और अयोध्याकाण्ड में भी वाल्मीकि ने राम के गुणों का निधि प्रस्तुत किया है। सर्वगुणों से सम्पन्न राम जैसे पुत्र को राजा दशरथ राजा क्यों न बनाए? और ऐसे सर्वगुणों के धनी राम अयोध्याकाण्ड में पिता की आज्ञा का पालन, पिता को सत्यप्रतिज्ञ बनाना अपना कर्तव्य मानते हैं। राजा दशरथ से दो वरदान मांगने पर राम को कोपभवन में बुलाती है, पिता की व्यथित दशा का कारण पूछने पर कहती है, अगर राजा की कही हुई बात का तुम पालन कर शको तो मैं तुम्हें इनकी व्यग्रता का कारण बताऊँगी। तब राम पिता के प्रति अपनी कर्तव्यनिष्ठा दर्शाते हुए कहते हैं, “महाराज के कहने से मैं आग में भी कूद सकता हूँ, तीव्र विषपान भी कर सकता हूँ तथा समुद्र में भी कूद सकता हूँ। राजा मेरे गुरु, पिता और हितैषी हैं, उनकी आज्ञापालन के लिए मैं क्या नहीं कर सकता ? राजा को जो इष्ट हो वह पूर्ण करने की मैं प्रतिज्ञा करता हूँ। **करिष्ये प्रतिजाने रामो द्विर्नाभिभाषते।** मैं दो तरफा बात करने वाला नहीं हूँ।¹¹ अपने वनगमन की बात सुनकर जरा भी विचलित न हो कर कहते हैं,

एवमस्तु गमिष्यामि वनं वस्तुमहं त्वितः।

जटाचीरधरो राज्ञः प्रतिज्ञामनुपालनायन्॥

⁹ वाल्मीकिरामायण- बालकाण्ड - १/ २

¹⁰ वही- १/८

¹¹ वही - १६/ १८-१९

“ अच्छा माँ, ऐसा ही हो, महाराज की प्रतिज्ञापालन के लिए मैं जटा और चीर धारण कर में यहाँ से वन में चला जाऊँगा ।¹²

कौसल्या, लक्ष्मण और सीता के सामने भी अपनि इस वचन पालन की बात पर दृढ़ रहते हैं। पिता की आज्ञापालन में अधर्म आचरण करने वाले कंडुमुनि, राजा सगर और परशुराम के उदाहरण प्रस्तुत करते हैं। सुमन्त्र को वापिस लोट जाने को कहते हैं क्योंकि माता कैकेयी को विश्वास हो जाए की राम में चले गए। राम को पुनः अयोध्या ले जाने के लिए चित्रकूट आए हुए भरत को भी आज्ञापालन से पिता को सत्यप्रतिज्ञ बनाना उनका कर्तव्य है इस बात की प्रतीति कराते हैं।

इस तरह अयोध्याकाण्ड में राम पिता को सत्यप्रतिज्ञ बनाने की भावना वाले श्रेष्ठ पुत्र के स्वरूप में आए हैं।

लक्ष्मण :- राम के कीर्तिध्वज का दण्ड अर्थात् लक्ष्मण। लक्ष्मण मानवता के पुण्यप्रकोप है। जब-जब राम पर मुसीबत आई है तब-तब लक्ष्मण का पुण्यप्रकोप जाग उठा है। क्योंकि लक्ष्मण बाल्यकाल से ही राम के प्रति वात्सल्य से भरे हुए और उनकी परछाई के समान रहे अतः उनकी कर्तव्यनिष्ठा विशेष रूप से सिर्फ राम के प्रति ही रही। वाल्मीकि रामायण में महर्षि वाल्मीकि लक्ष्मण के लिए कहते हैं,

बाल्यात् प्रभृति सुस्निग्धो लक्ष्मणो लक्ष्मीवर्धनः।

रामस्य लोकरामस्य भ्रातृजयेष्ठस्य नित्यशः

सर्वप्रियकरस्तस्य रामस्यापि शरीरतः॥

"लक्ष्मी की वृद्धि करने वाले लक्ष्मण बचपन से ही श्री राम के प्रति स्नेह रखते थे। तन और मन से वह जयेष्ठ राम की सेवा में अविरत रूप से जुड़े हुए थे।¹³

मैथिलीशरण गुप्त लक्ष्मण के लिए कहते हैं, “लक्ष्मण में कुछ अधीरता तथा उग्रता

¹² वही - १६ / २८

¹³ वही- बालकाण्ड - १७/ १५-१६

अवश्य है परन्तु साथ ही दृढ़ता, उदारता, दया, क्षमा, विवेक, धैर्य तथा रसिकता, कलप्रियता आदि गुण भी है। लक्ष्मण वस्तुतः घटना व्यापार तथा चारित्रिक विशेषताओं की दृष्टि से रामकथा का दूसरा नायक ही है।¹⁴

वाल्मीकि चाहते हैं कि राम और लक्ष्मण अभिन्न रहे इस कारण उनकी पहचान राम के साये की तरह कि है। विश्वामित्र के साथ भी राम के साथ लक्ष्मण को दशरथ ने भेजा। दोनों में अभिन्नता की स्थापना कर लक्ष्मण के पात्र को राम के साये में उत्कृष्ट बनाने का प्रयत्न वाल्मीकि ने किया है। मंथरा भी लक्ष्मण के राम के प्रति प्रेम से अनजान नहीं है इसलिए कैकेयी से कहती है कि, “राम और लक्ष्मण एक दूसरे के प्रति अश्विनौकुमार जैसा स्नेह रखते हैं, राम कभी भी लक्ष्मण का अनिष्ट नहीं करेंगे।¹⁵ मंथरा का यह भय गलत भी नहीं है। राम जब राज्याभिषेक की खबर सुनाने के लिए कौसल्या भवन में जाते हैं तब लक्ष्मण को देखते ही कहते हैं, “द्वितीय मे अंतरात्मा”। वाल्मीकि राम की इस उक्ति से भी यह सिद्ध करना चाहते हैं कि राम और लक्ष्मण भिन्न नहीं। लक्ष्मण का सम्पूर्ण चरित्र राम में एकाकार हो गया है। इसी कारण जब लक्ष्मण ने राम के वनवास की बात सुनकर कौसल्या को विलाप करते देख पिता दशरथ की निंदा करते हैं। राम को युद्ध कर के राज्य को पाने को कहते हैं। और भाई के प्रति अपनी कर्तव्यनिष्ठा दिखाते हुए इस युद्ध में भी उनका साथ निभाने का वचन देते हैं। मृदु स्वभाव के राम के लिए वह विरोध करने वाली प्रजा को भी नष्ट करने के लिए तैयार है।

राम के वनगमन से अत्यंत व्याकूल लक्ष्मण राम के दास के स्वरूप में खुद को समर्पित करते हैं। राम और सीता के साथ वनगमन के लिए तैयार हैं। वह राम से कहते हैं, “मैं धनुष्य-बाण ले कर आप के आगे चलूँगा और आप का पथप्रदर्शन करूँगा। प्रतिदिन आपके लिए फल,

¹⁴ रामकथा के पात्र, डॉ. राजुकर. भ. ह., पृ - २००

¹⁵ वाल्मीकि रामायण - अयोध्याकाण्ड - ८/ २०-२१

फूल और हवन सामाग्री लाऊंगा, सोते और जागते आपकी सेवा करूंगा।¹⁶ यहाँ लक्ष्मण की अपने भाई के प्रति अनन्य प्रेम के दर्शन होते हैं।

वनगमन की प्रथम रात्री जब राजा गुह के यहाँ व्यथित करते हैं तब भी पूरी रात्रि वह जग कर राम और सीता की रक्षा करते हैं। राजा गुह जब उन्हें शय्या पर शयन करने के लिए कहते हैं तब लक्ष्मण व्यथित हो कर बोल पड़ते हैं,

कथं दशरथौ भूमौ शयाने सह सीतया।

शक्या निद्रा मया लब्धुं जीवितं वा सुखानि वा॥

“ राम सीता सहित भूमि पर शयन कर रहे हो तब उत्तम शैया पर सोना, स्वादिष्ट भोजन लेना और अन्य कोई सुखोपभोग मेरे लिए कैसे शक्य है?”¹⁷ जब राम उन्हें नगर में बापस लौटने की बिनती करते हैं तब निःस्वार्थ रूप से लक्ष्मण कहते हैं,

मुहूर्तमपि जीवावो जलान्मत्स्याविवृद्धृतौ॥

न हि तातं शत्रुघ्न न सुमित्रां परंतप।

दृष्टुमिच्छेमद्याहं स्वर्गं वापि त्वया विना॥

“जैसे जल के बिना मछली नहीं रह सकती वैसे मैं और सीता आप के बिना नहीं रह सकते। मैं आपके बिना न तो पिताजी, ना भाई शत्रुघ्न, ना माता सुमित्रा और न स्वर्गलोक चाहता हूँ”¹⁸

लक्ष्मण का अपने भाई राम के प्रति सम्पूर्ण समर्पण भाव भक्त का ईश्वर के प्रति दास्यभक्तिभाव जैसा प्रतीत होता है। अपने समग्र व्यक्तित्व का उन्होंने राम में विसर्जन कर दिया है। ऐसा चरित्र कहीं पर भी दुर्लभ है।

➤ भरत :-

¹⁶ वही - अयोध्याकाण्ड - २८/५-१०

¹⁷ वही - अयोध्याकाण्ड - ४५ - ९

¹⁸ वही - अयोध्याकाण्ड - ४७/३१-३२

वाल्मीकि रामायण के चरित्र कर्तव्यनिष्ठा की परंपरा निभाते नजर आते हैं। अगर राम के प्रति श्रेष्ठ प्रेम की तुलना करनी है लक्ष्मण उनके साये की तरह है वह राम में एकाकार हो गए हैं, परन्तु भरत का एक स्वतन्त्र व्यक्तित्व हमें देखने मिलता है। अयोध्याकाण्ड में भरत का विशिष्ट व्यक्तित्व प्रदर्शित हुआ है। राजा दशरथ उन्हें 'धर्मात्मा' और 'जयेष्ठानुवर्ती' कहते हैं। समग्र रामायण में भरत इन विशेषणों को सार्थक करते दिखाई देते हैं।

रामायण में भाईयो ने जैसे की कर्तव्यनिष्ठा की दौड़ लगाई है। राम भाई के लिए राजगादी का त्याग किया और भरत ने अपने हिस्से में आई गादी का त्याग किया। इतिहास गवाह है कि राज्यासन के लिए भाई-भाई में कितने युद्ध होते हैं। यहाँ त्याग की प्रतियोगिता हो रही है। माता कैकेयी से निष्कंटक राज्य प्राप्त होने पर उसका अस्वीकार किया, राज्य के समस्त कर्मचारियों द्वारा अनुरोध करने पर वह कहते हैं,

“हे सज्जनो, आप सब बुद्धिमान हो। पर ऐसी बात न करे क्योंकि हमारे कुल के जयेष्ठ पुत्र ही राज्य के अधिकारी हुए हैं। वही उचित है। मैं दशरथ का पुत्र हूँ, मेरे जयेष्ठ भ्राता का राज्य कैसे छिन लूँ ? राज्य और मैं दोनों रामा के ही हैं।

अतः आपा सभी को इस धर्म सभा में आप को धर्मसंगत बात करनी चाहिए।¹⁹ भरत के लिए पीड़ादायक स्थिति यह थी कि जब वह अयोध्या लौटे माता कौसल्या से ले कर लक्ष्मण, राजा गुह, ऋषि भरद्वाज तक सभी ने उनके प्रति राम के लिए आशंकाएँ की। फिर भी अविचल रहकर राम के प्रति वह अपना कर्तव्य निभाते रहे।

चित्रकूट जा कर राम को राज्य का स्वीकार करने कि बिनती करते हैं, राम कि चरणपदुका ले कर राज्य पालन करते हैं। भरत कर्तव्यनिष्ठा का उत्तम उदाहरण है।

➤ निषादराज गुह:-



अयोध्याकाण्ड में प्रथम बार जिसका नमोल्लेख हुआ है ऐसे शृंगबेरपुर के निषाद राजा गुह। वाल्मीकि कहते हैं कि वह राम के प्राणों से भी प्यारे मित्र थे। राम के आगमन की खबर सुनकर राम को मिलकर अपने राज्य का स्वीकार करने की बिनती करते हैं। अपने राजाअथवा मित्र के प्रति अपनी कर्तव्यनिष्ठा निभाते हुए कहते हैं कि, “मेरे अधिकार की समस्त भूमि का आप स्वीकार करें। आप ही हमारे स्वामी हों। हमारे राज्य का शासन आज से आप ही करें”। राम, लक्ष्मण और सीता की सेवा में कोई कसर नहीं रखते। रात्री में राम की सेवा में धनुष्य ले कर पूरी रात जगकर व्यतीत करते हैं। राम को नदी के उस पार ले कर जाना अपना धर्म मानते हैं। राम के अलौकिक मित्र के स्वरूप में विद्यमान हैं। भरत को आते देख उसके प्रति आशंका व्यक्त करते वह अपने पूरे सैन्य को सज्ज करते हैं। भरत से स्पष्टता होने पर ही उसे अपने राज्य में प्रवेश करने देते हैं।

अयोध्याकाण्ड में गौण चरित्र के रूप में निर्दिष्ट निषादों के शक्तिशाली राजा गुह भी राम के प्रति अपन कर्तव्य नहीं भूले।

राम, लक्ष्मण, भरत, दशरथ आदि पुरुष पात्रों के साथ सीता, कौसल्या, कैकेयी, सुमित्रा, मंथरा और अनसूया जैसे नारी पात्रों का विशेष प्रदान रहा है। रामायण के नायक राम हैं परंतु समग्र कथानक की नियामिका, समग्र घटनाचक्र की संचालिका तथा उसे गति प्रदान करने वाले नारी पात्र रहे हैं ऐसा हमें अयोध्याकाण्ड में प्रतीत होता है।

➤ सीता :-

समग्र रामायण और अयोध्याकाण्ड में आदर्श पात्रों के स्वरूप में जिनका समावेश हुआ है वह सीता हैं। सीता का अति मृदु और दिव्य चित्रण वाल्मीकि ने रामायण में किया है। उनके जन्म का वृत्तांत भी इतना ही दिव्य है। रामायण के बालकांड में नारद उनका वर्णन करते,

सर्वलक्षणसम्पन्ना नारीणामुत्तमा वधूः।

सीताप्यनुगता रामं शशिनं रोहिणी यथा॥

“सर्व लक्षणों से सम्पन्न, नारियों में उत्तम पत्नी, जैसे चंद्रमा का अनुसरण रोहिणी करती है वैसे सीता राम का अनुसरण करती थी”।²⁰

वाल्मीकि ने रामायण में ‘राम’ के साथ ‘रामा’ अर्थात् सीता के चरित्र का भी सूक्ष्मता से निरूपण किया है। “सीतायाः चरितं महत्”।²¹ जिस में सीता का चरित्र चित्रण है वह काव्य। सीता के उत्कृष्ट गुणों का आलेखन कविने अयोध्या कांड में किया है। रामायण में सीता ने राम के वनगमन के अवसर पर सर्वप्रथम अपना मुँह खोला है। सीता राम के साथ वनगमन ही

अपना कर्तव्य मानती है इस लिए आज्ञा मांगते हुए कहती है, “अन्य स्वजन जैसे कि माता, पिता, भाई आदि अपने-अपने कर्मों का फल भोगते हैं किन्तु केवल पत्नी ही अपने पति के भाग्य का अनुसरण करती है इसलिए मुझे वन में रहने की आज्ञा मिला गई है”।²² राम के साथ चौदा साल नहीं परन्तु सेकड़ों साल रहना भी अपना सौभाग्य मानती है। अपना वियोग अगर राम से हो तो अपनी मृत्यु निश्चित मानती है।

सीता की इस प्रकार वनगमन की बिनती सुन राम जब सीता के सामने वन के कष्टों का वर्णन करते हैं तब सीता अश्रुधारा के साथ अपना आक्रोश भी व्यक्त करते हुए कहती है, “हे प्राणनाथ आपने जो वनवास के कष्ट बताए वह आपके स्नेह के कारण अब मेरे लिए गुणस्वरूप बन जाएंगे । यह आप अच्छी तरह समझ लीजिए (तान् विद्धि तव) कि कोई भी पतिव्रता स्त्री अपने पति के बिना जीवित नहीं रह सकती”। सीता “भर्ता हि परदैवतम्”। ऐसा मानती है। रामा को बहुत समाजने के बाद सीता अन्त में ऐसी घोषणा कर देती है,

यदि मां दुःखितामेवं वनं नेतुं न चेच्छसि।

विषमग्निं जलं वाहमास्थास्ये मृत्युकारणात्॥²³

²⁰ वाल्मीकि रामायण :बालकाण्ड -१/२४

²¹ वही - ४/६

²² वाल्मीकि रामायण अयोध्याकाण्ड- २४/४

²³ वही - २६/१९



सीता की इस पतिपरायणता के लिए सी.वी.वैद्य का मानना है कि, “सीता अपने पति को वनमें सहकार द्वारा खुशी देना चाहती है। सीता के अति कठोर वचनों के बाद भी राम उसे अनुमति नहीं देते तब सीता अत्यंत क्रोधित हो कर राम के पौरुषत्व पर आक्षेप करते हुई कहती है, “मेरे पिता ने जब आपको जामाता के रूप में प्राप्त किया तब आपको इस बात का पता न होगा कि आप मात्र शरीर धारण करने वाले परुष ही हो, कार्यो से तो आप स्त्री ही हो। मुझे छोड़ के जाने पर संसार आपको पराक्रम हिन कहेगा”।²⁴ अपने कर्तव्य पालन हेतु सीता राम के प्रति कठोर होती है। सीता अब बिनती नहीं करती परन्तु कटाक्षयुक्त वचनों से राम के साथ वनगमन की इच्छा व्यक्त करती है जिसमें राम के पास मना करने का कोई अवकाश नहीं है।

आक्रोश के बाद सीता कान्तासम्मित राम को फिर से प्रेमपूर्वक समाजाते हुए कहती है कि “सावित्री की तरह मैं भी आपकी की अनुगामिनी बन हमेशा आपके साथ रहूँगी। सीता कोई भी स्थिति में राम से अनुकूलन साधने के लिए तैयार है। वनमें कांटो को रुई के समान, धूल को चन्दन के समान, कुश को सुखदायक गद्दे के समान मानने को तैयार है। इस तरह रामा की राम के प्रति कर्तव्यपरायणता को वाल्मीकि ने जैसे की एक ही काण्ड में उजागर किया है।

➤ कौसल्या :-

वाल्मीकि रामायण में कौसल्या के पात्र का सर्वाधिक विकास अयोध्याकाण्ड में हुआ है। राम के राज्याभिषेक के अवसर पर यह पात्र व्यक्त होता है। राजा दसरथ से जिसका सदा अनादर हुआ है ऐसी कौसल्या को राम के राजा होने की आकांक्षा हमेशा से थी। वाल्मीकि उसे ‘चिरकालाभिकांक्षितम्’ कहते हैं। इसी आशा से वह अपमानित होने पर भी एक आध्यात्मिक जीवन जीती रही। सरलता और पवित्रता कि मूर्ति कौसल्या राम के राज्याभिषेक के समाचार सुन अनहद आनंद को प्राप्त हुई। परंतु पुत्र के अभिषेक के लिए आतुर कौसल्या राम के वनवास के समाचार सुनकर अत्यंत व्यथित हुई। कौसल्या चाहती तो अपने पुत्र को राजगादी के लिए

विवश कर सकती थी, राम को मातृधर्म समजाते हुए वह कहती है कि, “माता की सेवा आपका सच्चा धर्म है। पिता की तरह मैं उतनी ही पूज्य हूँ। मैं आपको वन में जाने की आज्ञा नहीं देती”।²⁵ परन्तु राम का दृढ़ निश्चय देख राम के पुत्रधर्म का सन्मान करती हुई वह उनकी मंगलकामना करती है।

कौसल्या एक प्रेमपूर्ण सास की भूमिका में भी निखार कर आई है। सुमन्त्र जब राम, सीता को वन में छोड़ कर आते हैं तब कौसल्या सीता के दुःखों को याद के विलाप करती है। वह कहती है, अठारह साल की तरुणी सीता दुःख भोगने योग्य नहीं है। वन में शरदी-गरमी को कैसे सह पाएगी? उत्तम स्वादिष्ट भोजन ग्रहण करने वाली सीता वन का सूखा भोजन कैसे कर पाएगी? सदा गीत और वाद्यों के मधुर ध्वनि सुनने वाली वह सिंहों की दहाड़े कैसे सुनेगी”?²⁶ चित्रकूट में मातावत् सीता को गले लगाकर कहती है, “दुर्बल अङ्गो वाली हे सीता, तुम दशरथ की पुत्रवधू और राम की पत्नी हो, यहाँ वन में क्यों दुःख भोग रही हो?”²⁷ अपनी पुत्रवधू से माता समान स्नेह के लिए कौसल्या को वंदन है।

आजीवन अनादर करने वाले राजा दशरथ रामगमन के बाद कैकेयी से आहत होकर जब कौसल्या के पास आए तब उनके सामने कई बार राम के वनवास पर अपना आक्रोश व्यक्त किया अंतिम समय पर उन्हें सहारा देना वह अपना कर्तव्य मानती है। राम के वन गमन के शोक के कारण कौसल्याने राजा दशरथ को जो भी उपालंभ युक्त वचन कहे उस के प्रति पश्चाताप भी करती है, कहती है, “हे धर्मज्ञ राजा ! मैं स्त्रीधर्म को जानती हूँ और यह भी जानती हूँ कि आप सत्यवादी हैं। इस समय मैंने जो न कहने योग्य बात कही है, वह पुत्रशोक से पीड़ित होने के कारण मेरे मुख से निकल गई”।²⁸ वह राजा की सुश्रुषा करती है। राजा

²⁵ वही - १८/२६-३१

²⁶ वही - ५५/४-६

²⁷ वही - ९६/२०

²⁸ वही - ५६/११

अंधमुनिपुत्र के वध और उनके शाप का प्रसंग सुनाते अपना देहत्याग कौसल्या और सुमित्रा के सानिध्य में ही करते हैं।

इस प्रकार महर्षि वाल्मीकि ने कौसल्या के पात्र को अयोध्याकाण्ड में विनयमूर्ति और ममता से परिपूर्ण माता तथा पतिव्रत परायण पत्नी के स्वरूप में उजागर किया है।

➤ सुमित्रा :-

रामायण में तीनों माता के पात्र का सम्पूर्ण विकास अयोध्याकाण्ड में ही हुआ है। कौसल्या की विशेष रूप से। माता के चरित्रों में सब से कम बोलने वाला चरित्र है परन्तु जितना भी बोली अत्यंत सारगर्भित बोली।

राजा दशरथ ने जब पुत्रकामेष्टि यज्ञ किया तब बहुत सोच कर सुमित्रा को यज्ञ से प्राप्त 'पायस' के दो हिस्से दिये कौसल्या और कैकेयी के हिस्सों में से आधा-आधा हिस्सा सुमित्रा को दिया। सुमित्रा को भरत और शत्रुघ्न ऐसे दो पुत्रों का जन्म हुआ। इस घटना का ऐसा अर्थघटन स्वाभाविक ही हो सकता है कि, लक्ष्मण और शत्रुघ्न राम और भरत के प्रिय बनकर अपने स्वतंत्र व्यक्तित्व के साथ भी सदा उनकी छाया के समान उनके साथ रहे। सुमित्रा सपत्नी होकर भी छोटी बहन की तरह सदा कौसल्या का साथ निभाने का अपना कर्तव्यपालन करती रही उसी तरह अपने पुत्रों को भी वही राह पर चलने के लिए संस्कारित करती रही।

राम के राज्याभिषेक के समाचार सुन कर वह आनंदित होती है किन्तु अपने आनंद को अति प्रदर्शित नहीं करती। राम के वनगमन पर अत्यंत व्यथित भी नहीं होती। उसकी स्थितप्रज्ञता का परिचय तो तब होता है जब वह लक्ष्मण के वनगमन के निर्णय को निःसंकोच स्वीकार करती है। मितभाषी सुमित्रा लक्ष्मण को अत्यंत कम शब्दों में दिव्य उपदेश प्रदान करती है। वह लक्ष्मण से कहती है,

रामं दशरथं विद्धि मां विद्धि जनकात्मजाम् ।

अयोध्यामटवीं विद्धि गच्छ तात यथा सुखम्॥

“हे पुत्र राम को पिता दशरथ समजना, जनकात्मजा को माता। वन को अयोध्या मानकर सुखपूर्वक प्रस्थान करो। दान देना, यज्ञमे दीक्षा ग्रहण करना और युद्ध में शरीर का त्याग करना ही उच्च कुल के उचित आचार है”।²⁹

सुमित्रा रामायण में इतना ही प्रगट हुई है। सुमित्रा के इस उपदेश से प्रभावित हो कर श्री पाण्डुरंग आठवले का कहना है कि, “उसका उपदेश पढ़कर मुझे ऐसा लगा कि ऐसा पात्र रामायण में एक ही बार क्यों आया ? दुःख के प्रसंग में भी ऐसा भव्य उपदेशात्मक विचार देने वाला व्यक्तित्व कैसा होगा ! सुमित्रा का अधिक चित्रण अधिक लाभदायक और अधिक आनंद प्रदान करने वाला होता”।³⁰

सुमित्रा के इन्हीं लक्षणों की प्रशंसा कराते हुए डॉ. पांडुरंग राव कहते हैं, “सुमित्रा के ये वचन सुमित्रा के मुंह से निकले पहले उद्गार हैं। अपनी सारी वेदनाएँ अपने अन्दर छिपाकर राग-द्वेष, ममता-मोह, लोभ-राग आदि लौकिक भावनाओं से परे होकर त्यागशील पुत्र को तप की और प्रेरित करने के लिए वीरता, धीरता और गंभीरता का यह मंगलमय संगम चाहिए जो सुमित्रा के व्यक्तित्व का सहज आभूषण है”।³¹

वाल्मीकि ने यहाँ सुमित्रा को दो विशेषण दिये “**धर्मे स्थिता धर्मसमित्रा**” । सुमित्रा के पात्र के लिए सदा यथार्थ है।

चित्रकूट में सभी माताओं के साथ गई सुमित्रा अपने पुत्रों को सेवा का मंत्र प्रदान करती हुई अपने स्थान की तरह ही सभी गुणों से ‘**मध्यमा**’ है। विनय-विवेक में ‘मध्यम’, स्वस्थता और अस्वस्थता में ‘मध्यम’, भाषण में ‘मध्यम’ ऐसे गुणों का सिंचन कर वाल्मीकि ने एक अलौकिक और संस्कारी पात्र का निर्माण किया।

➤ मंथरा :-

²⁹ वही - ३६/७-८

³⁰ आठवले, पांडुरंगशास्त्री. श्री वाल्मीकिरामायण दर्शन, पृष्ठ-७८

³¹ राव, पाण्डुरंग, रामायण के महिलापात्र. पृष्ठ-२९

रामायण के अयोध्या काण्ड के सात से नौ (७-९) सर्ग में मंथरा के पात्र का इस प्रकार निरूपण वाल्मीकि ने किया है कि अगर यह पात्र न होता तो रामायण की कथा राम के राज्याभिषेक पर ही समाप्त हो जाती। रावण के वध का हेतु सिद्ध हुआ न होता। रामायण की समस्त कथा का बीज इस सातवें सर्ग में ही बोया गया है ऐसा प्रतिपादित होता है। इस में मंथरा का मुख्य प्रदान रहा है। मंथरा कैकेयी की जातिदासी होने के कारण उसे कैकेयी के प्रति पक्षपात होना स्वाभाविक है। वाल्मीकि ने इस बात का प्रदर्शन रामायण में किया है।

जातिदासी यतो जाता कैकेय्यास्तु सहोषिता।

प्रासादं चन्द्रनसंकाशमारुरोह यदृच्छया ॥³²

मंथरा कैकेयी की जातिदासी है। तथा कैकेयी के पालन में उसका महत्वपूर्ण प्रदान था। मंथरा की बाटो से मोहान्ध हुई कैकेयी को लगता है की मंथरा ही उसका हित सोचने वाली है। अगर मंथरा न होती तो उसे राजा दशरथ के कपट का पता नहीं चलता। मंथरा कैकेयी के प्रति अपनी वफादारी और सज्जता का कारण बताती है, “हे कैकेयी तेरे दुःख से मैं दुःखी और तेरी वृद्धि में मेरी वृद्धि है। तेरे पति धर्मवादी और शठ है। मीठा बोलने वाले और दारुण भी है। शुद्ध भाव वाली तू अपने पति की शठता को जानती नहीं है”।³³ कैकेयी और मंथरा के ऐसे अनेक संवाद द्वारा कवि वाल्मीकि ने मंथरा के पात्र का परिचय दिया है।

राजा दशरथ का भरत की अनुपस्थिति में तत्काल राम के राज्याभिषेक का निर्णय, कैकेयी से ‘राज्यशूलक’ से विवाह की बात, इन सभी बातों का अगर विचार करें तो दशरथ की भर्त्सना करती मंथरा के यह वाक्य कईबार मंथरा के बारे में हमें सोचने को मजबूर करते हैं। इस राजनीति की खटपटों की जानकारी मंथरा कैकेयी के सामने उसके हितसाधक वचनों को तर्कबद्ध तरीके से प्रस्तुत करती है और कैकेयी को सम्पूर्णतया परिवर्तित करती है।

³² वाल्मीकि रामायण अयोध्याकाण्ड- ७/१

³³ वही-७/१८

रामायण के कई टिकाकारों ने तो मंथरा को देवों द्वारा भेजी गई अप्सरा के स्वरूप में भी दर्शाया है। जिनका उद्देश्य राम-वनगमन द्वारा रावण का विनाश करना था। किसी भी दिशा से अगर सोचें तो अयोध्याकाण्ड में कथापरिवर्तन की सूत्रधार मंथरा ही सिद्ध होती है। इस कारण ही वाल्मीकि ने मंथरा के पात्र का प्रादुर्भाव किया है क्योंकि इस के बाद रामायण में मंथरा का पात्र और कहीं दिखाई नहीं देता ।

इस प्रकार वाल्मीकि रामायण के अयोध्याकाण्ड के इन पात्रों की एक दूसरे के प्रति अलौकिक कर्तव्यपरायणता ही रामायण को एक आदर्श काव्य के रूप में प्रस्तुत करती है और करती रहेगी। साम्प्रत समय में जब वैयक्तिक और पारिवारिक मूल्यों का हास हो रहा है। देश और विदेश के हर भारतीयों के घर में रामायण और इनके चरित्रों का नाम लिया जा रहा है तब यह नाम मात्र नाम न बना रहे परन्तु रामायण के इन आदर्शों और मूल्यों का पालन हर घर में होता रहे तभी इन चरित्रों की सही अर्थ में प्रासंगिकता होगी।

.....

संदर्भग्रन्थ सूची

- 1) पाण्डेय, रामनारायण।(अनुवादक) (सं-२०९२) *वाल्मीकि रामायण*। गीताप्रेस गोरखपुर, पन्द्रहवाँ संस्करण।
- 2) भारती, आशा। (१९९६) *रामकथा और उनके नारी पात्र* इतिहास शोध संस्थान, नई दिल्ली, प्रथम संस्करण।
- 3) राव, पाण्डुरंग। (१९९०, १९९३) *रामायण के महिला पात्र* । भारतीय ज्ञानपीठ प्रकाशन, नई दिल्ली, प्रथम संस्करण, द्वितीय संस्करण।
- 4) ठाकुर, रवीन्द्रनाथ. देसाय, महादेव(अनुवादक). (१९८९) *प्राचीन साहित्य*. श्री महादेव जन्म शताब्दी समिति, हरीजन आश्रम, अमदावाद. प्रथम आवृत्ति.

- 5) શાહ, ગુણવંત. (૨૦૦૩) રામાયણ માનવતાનું મહાકાવ્ય. આર.આર.શેઠ કંપની, મુંબઈ, પ્રથમ આવૃત્તિ.
- 6) આઠવલે, પાંડુરંગશાસ્ત્રી. (૧૯૭૭) શ્રી વાલ્મીકિ રામાયણ દર્શન. સદ્વિચાર દર્શન ટ્રસ્ટ, મુંબઈ, સાતમી આવૃત્તિ.
- 7) Vyas, Ramkrishna T. (General Editor). (1992) *Valmiki Ramayana* (Text as Constituted in its Critical Edition). Oriental Institute, M. S. University, Vadodara, First Edition. Vaidya P.L.(Editor). (1962) *The Ayodhyakand. The Second Book of Vlmiki Ramayana*, Oriental Institute, M. S. University, Vadodara, First Edition.
- 8) Wurm, Alois. (1976) *Character-Portrayals in the Ramayana of Valmiki*. Ajanta Publications, Delhi, First Publication.
- 9) Jacobi, Herman. Ghosal, S.N.(Translator). (1960) *The Ramayana(Das Ramayana)*. Oriental Institute, M. S. University, Vadodara, First Edition.

.....